

न चारम्भविधातः PĀṆĀT. 172, 25. सर्वारम्भपरित्यागिन् BHAG. 12, 16. आरम्भः सद्यःशरम्भः RAGH. 1, 15. अर्कत्रभिप्रायार्थो जयमारम्भः P. 1, 3, 68, Sch. KĀTJ. zu 4, 1, 79. उपायपूर्वं आरम्भः AK. 3, 4, 142. तेनारम्भेण मक्ता मा-मुपास्ते MBH. 13, 812. सर्वारम्भेण तत्कुर्यात् KĀTJ. 67. स्थिरारम्भ adj. M. 7, 209. यदा — आरम्भा वा विपद्यन्ते ADDB. Br. in Ind. St. 1, 40. निष्पालारम्भयत्नाः MEGH. 33. तस्यारम्भः — सिद्धः 72. — 2) *Anfang, Beginn*: आशिषामारम्भं वाचयति ÇĀT. Br. 3, 1, 3, 24. 6, 2, 3, 38. 4, 1, 5. 7, 3, 1, 35. 9, 3, 2, 4. KĀTJ. Çr. 1, 4, 4. 4, 5, 22. नृत्यारम्भे MEGH. 37. वाक्चारम्भ AK. 3, 4, 32, 6. आरम्भवाद MADHUS. in Ind. St. 1, 23, 13. आरम्भं करू mit dem inf. *Etwas beginnen* PĀṆĀT. 10, 11. — Die Lexicographen geben folgende Bedeut. an: *das Beginnen, Beginn* AK. 3, 3, 26 (अभ्यादान, उद्घात). 2, 7, 12 (ज्ञावारम्भ उपक्रमः). TRIK. 3, 2, 18. H. 1310. *Einleitung* (प्रस्तावना, ग्रामुख) TRIK. 3, 2, 30. *Eile* (ब्रह्म); dieser Artikel folgt im AK. unmittelbar auf den vorhergehenden, wird aber von diesem unterschieden) H. an. 3, 451. MED. bh. 10. *Anstrengung* (उद्यम) TRIK. 3, 3, 284. H. an. MED. Stolz (दुर्ष) TRIK. H. an. 3, 450. MED. Tod (वध) H. an. MED. — Vgl. चित्रार्पितारम्भ und वार्तारम्भ.

आरम्भक (wie eben) adj. *in Angriff nehmend, an Etwas gehend, beginnend* P. 7, 1, 63, Sch.

आरम्भणा (wie eben) n. gaṇa अनुप्रवचनादि zu P. 5, 1, 111. 1) *das Anfassens, Ergreifen, Gebrauchen*: यथा सोम्यैकेन मृत्पिण्डेन सर्वं मांसयं विज्ञाते स्याद्वाचारम्भणं (? besondere Bezeichnung, ÇĀṆK.: = वागालम्बनम्) विकारो नामधेयं मृत्तिकेत्येव सत्यम् KHĀND. Up. 6, 1, 4. — 2) *Ort des Anfassens; Handhabe*: किं स्विदासीदधिष्ठानमारम्भणं कतमतिस्वत्कथासीत् RV. 10, 81, 2. आरम्भणतो वै वज्रस्याणिम Air. Br. 2, 35. वेद्यारम्भण KĀTJ. Çr. 14, 1, 13. — Vgl. अनारम्भण.

आरम्भणवत् (von आरम्भण) adj. *anfassbar* ÇĀT. Br. 4, 6, 4, 2.

आरम्भणीय adj. = आरम्भणं प्रयोजनमस्य gaṇa अनुप्रवचनादि zu P. 5, 1, 111. *womit zu beginnen ist, den Anfang bildend*: स्फूर्त् Air. Br. 6, 6. ÅÇV. GAH. 7, 1. अरुः ÇĀT. Br. 12, 2, 4, 1.

आरम्भता nom. abstr. von आरम्भ *Anfang*: तदेवारम्भतां प्राप तस्य पृच्छ्याः कश्यदे KATHĀS. 16, 79.

आरम्भिन (von र्भ् mit आ) adj. *der Vieles beginnt* JĀGĀN. 3, 138.

आरम्भकं adj. von आरम्भक्य gaṇa कणवादि zu P. 4, 2, 111.

आरम्भक्य patron. von आरम्भक्य gaṇa गर्गादि zu P. 4, 1, 105.

आरव (von र्भ् mit आ) m. 1) *Geschrei, Geheul, Gekrächz* P. 3, 3, 50. AK. 1, 1, 2. H. 1400. वानराश्चक्रारवम् R. 4, 50, 23. शुकुनैर्द्वारुणारवैः 1, 26, 14. तदागमनज्ञानन्दलसत्कलकलारवाः VID. 31. Vgl. आराव. — 2) N. pr. eines Volkes VARĀH. BRH. S. 14, 16 in Verz. d. B. H. 241.

आरस्य n. nom. abstr. von आरस P. 5, 1, 121.

आरा f. *Ahle, Pfieme* gaṇa भिदादि zu P. 3, 3, 104. gaṇa वृषादि zu 6, 1, 203. Vop. 26, 191. AK. 2, 10, 35. H. 913. an. 2, 395. MED. r. 7. als Waffe Pūshan's: यो पृषन्वल्ह्युचोर्दनीमारो विभर्ष्याषुषो । तयो समस्य हृदयमा रिख किक्किरा कृणु RV. 6, 5, 8. 5. 6. als chirurgisches Instrument Suçr. 1, 26, 13. 27, 6. 34, 17. 2, 28, 10. *Ahle* oder *Bohrer* VJUTP. 137. — Vgl. आराय.

आराग (von रञ्ज् mit आ) m. N. einer der sieben Sonnen am Ende einer Weltperiode VP. 632, N. 6. — Vgl. आराग.

1. आराय (आरा + अय) n. *die Spitze einer Ahle*: आरायमात्रः ÇVE-riçv. Up. 5, 8. ÇĀṆK.: = प्रतोदाप्रतोतलोक्तकण्टकाप्रमात्रः, RÖER: *only like the iron thong at the end (of a whip)*. Nach HALĀJ. im ÇKDr. *das äusserste Ende eines Pfeiles mit halbrunder oder anderer Spitze*: अर्थ-चन्द्राख्यस्त्रमुखम् । अर्थचन्द्राखुरप्रादिधारायं मुखमुच्यते । आरायं तु मुखं तेषां पुष्पपत्रादिभेदतः ।

2. आराय (wie eben) adj. f. आ *zugespitzt, von oben nach unten sich verbreitend (wie eine Ahle)*; Gegens. परोवरीयम्: आरायमावातरदीना-मुपेयात् एकमये ऽथ द्वावथ त्रीनथ चतुरे: TS. 6, 2, 3, 5.

आरासी (von 3. अ + रासिन्) f. N. pr. einer Gegend gaṇa धूमादि zu P. 4, 2, 127; davon adj. आरासिक (oder etwa ऽसिक?) ebend.

आराऽ mit dem Bein. कालाप N. pr. eines Lehrers von Çākjamuni SCHIEFNER, Lebensb. 243. 293 (13. 63). BURN. Intr. 134, N. 1. 383. fg. (आ० कालाम्).

आराठि oder आराठिह् (von आराठि) patron. des Saugata, eines Lehrers, AIR. Br. 7, 22.

आरात् (abl. von 1. आर) gaṇa स्वरादि zu P. 1, 1, 37. 1) *aus der Ferne, von fern; fern, fernhin; fern von, mit dem abl.* (P. 2, 2, 29) AK. 3, 4, 32, 4. H. an. 7, 21. MED. avj. 28. पाहि नो ह्यरादपश्यम् 104, 43. 10, 27, 19. AV. 6, 32, 1. 8, 2, 9. 12. VS. 19, 84. आरात्केश्या अस्मत् (पातय) AV. 1, 19, 1. 6, 30, 2. आरा-त्ययः KĀTJ. Çr. 21, 3, 19. आराच्छिद्रेपः सन्तुत्युपेत RV. 10, 131, 7. आरा-द्विसंष्टा इयं पतन्तु AV. 2, 3, 6. 8, 1, 12. 10, 1, 1. 31, 11. 56, 6. ततो ऽपश्य-द्विडुरं तूर्णमारुद-यायात्तम् MBH. 3, 246. आरातिष्ठत मा भूयं समीपमुप-सर्पत 1, 6447. आनीयतानेप यतो ऽरुमारुत् 7292. 7157. KATHĀS. 22, 194. 23, 185. संनित्येपकारकमारुडुकारकं च MADHUS. in Ind. St. 1, 13, 7. — 2) *in der Nähe* Vop. 3, 22. AK. H. an. MED. RAGH. 2, 10, 3, 13. Diese Bedeutung geben die Comm. dem Worte öfters auch in den oben u. 1. aufgeführten Stellen aus den Veden. — 3) *so gleich, alsobald*: दृढतरम-पिधाय द्वारमारुत् (Sch.: = अद्यवद्विक्तकाले) PRAB. 72, 13. तावच्च तत्र दैवात्तं दृष्टा दाशपतेः सुताः । सत्यव्रतस्य तस्यारात्परिज्ञायिवमव्रुवन् ॥ KA-THĀS. 26, 135. ÇĀK. 126. — Vgl. आरकात्, आरातात्, आरे.

आराति m. *Feind* = आराति BHARATA zu AK. und DVIRŪPAK. im ÇKDr.

आरातीय adj. von आरात् P. 4, 2, 104, VArt. 9, Sch. Vop. 7, 16, 17.

आरातात् (von आरात्) adv. *aus der Ferne, von fern*: नृकी नु वै म-हता अत्यस्मे आराताच्छिद्रेषो अर्तमापुः RV. 1, 167, 9. आराताच्छित्त-मार्दं न आ गच्छि 7, 32, 1. 8, 22, 16.

आरात्रिक (von 2. आ + रात्रि) n. *das zum Schwenken vor einem Idol dienende Licht* (नीराजननिमित्तीय) oder *Gefüss* (नीराजनपात्र); *die Ceremonie selbst* (नीराजना): आराति इति भाषा । तथा च हृदिभक्तिविलासे । ततश्च मूलमन्त्रेण द्वावा पुष्पाञ्जलित्रयम् । महानीराजनं कुर्यान्महावायुञ्जय-स्वनिः ॥ प्रज्वालयेत्तदर्थं च कर्पूरेण धृतेन वा । आरात्रिके शुभे पात्रे विषमा-नैकवार्तिकम् ॥ ÇKDr. N. einer Ceremonie AV. PARĪ. in Verz. d. B. H. 90, 8.

आराध m. = आराधन 2, d. Vop. 23, 11.

आराधन (von राध् im caus. mit आ) 1) adj. *für sich gewinnend, gün- stig stimmend*: इदं तु ते भक्तिनम्रं सतामारधनं वपुः KUMĀRAS. 6, 73. अग्ने-